

छोटी-सी बात

का बहुत शौक था। युक दिन वह बैठी कौड़ियाँ खेल रही थी। उसे देखकर दानी ने कहा-

महाराज ! बिट्ठिया
सात वर्ष की हो गई।
अब इसे विद्याध्ययन
कराना चाहिए।

चन्पापुरी के दाना एपुमद्दन और दानी दतिसुन्दरी
की इकलौती लाडली पुत्री थी सुदसुन्दरी। वह बड़ी
सुन्दर और बुद्धिमान थी। उसे कौड़ियों से खेलने

हाँ, मैंने भी यही सोचा है।
इसे प्रसिद्ध कलाचार्य जानसेन के
गुरुकुल में भेजना उचित रहेगा।



सुदसुन्दरी कलाचार्य जानसेन के गुरुकुल में पढ़ने जाने लगी। इसी गुरुकुल में नगर-सेत का पुत्र अमर कुमार भी पढ़ता था। अमर इस गुरुकुल का सर्वश्रेष्ठ छात्र था। दिखने में सुन्दर, हँसमुख,
पढ़ने में तेज बुद्धि वाला। सभी छात्र अमर को अपना नेता मानते थे।



छोटी-सी बात

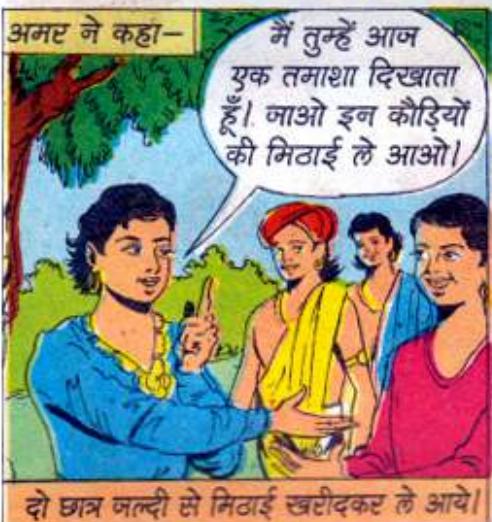
एक दिन गुरुकुल में भोजन-अवकाश हुआ। छात्र भोजन करके खेल रहे थे। राजकुमारी एक वृक्ष की छाया में सोई थी। उसे देखकर छात्र हँसने लगे—



अमर ने पल्लू की गाँठ खोली तो उसमें सात कौड़ियाँ निकलीं। अमर हँसा—



अमर ने कहा—



अमर ने सभी को प्रसाद बांटा। तब तक राजकुमारी भी जग गई।

अमर ने उसे भी प्रसाद दिया—



अमर ने राजकुमारी की हथेली में दो-चार बँधी रखीं तो वह मुँह बिगाइकर बोली—



